तकदीर–रूढिवादी सोच का चक्रव्यूह है ।

तकदीर की तस्वीर पर निश्पक्ष विचार मंथन किया जाये तो उसकी असलियत का चेहरा उभर कर हमारे सामने आाता है । निश्पक्ष मानव–मन कहने को बेबस हो जाता है कि तकदीर कुछ नही मानव–जीवन को सन्तुलित और आगे बढने की आशावादी सोच के अलावा और कुछ नही है । दूसरे अर्थो में देखा जाये तो तकदीर जीवन जीने की एक कला का नाम है । इसी की आड़ में कुछ तिकड़मबाज लोग दिन चौगुनी रात आठ गुनी तरक्की कर रहे है और करोड़ो दबे कुचले लोग आंसू से रोटी गीली करते हुए जीवन बसर कर रहे है । संवरी हुई तकदीर वालों के उपर दृष्टिपात किया जाये तो यह बात उभर कर सामने आ ही जाती है कि जो गरीब दबा कुचला तबका है वह अधिक श्रम करता है क्योंकि आदिकाल से वह दबा कुचला है।उसके पास एक ही पूंजी है वह है श्रम । इसी श्रम की कुल्हाड़ी से अपने लिये रूखी–सूखी रोटी और अर्धबदन तक के कपड़े का इन्तजाम तंग हाथो से कर पाता है ।रही आशियाने की बात तो अधिक संकल्पित दबा कुचला तबका और श्रमिक समुदाय ही इसका सुख भोग पाते है बाकी तो कहीं सड़क के किनारे तो कहीं पेड़ की छांव में जीवन बिताने को मजबूर रहते है ।

तनिक और ईमानदारी से विचार करते है मेहनत के उपर तो पाते है कि श्रमिक वर्ग बहुत अधिक मेहनत करता है। अपने कर्म के फर्ज के परिपालन में वह रात –दिन को भी नही देखता और इस कर्म की रणभूमि में उसके आंख मसलते बच्चे तक भी सहभागी बनते है तो गरीबी उसी की चौखट क्यो ? जबकि वह तो कर्म को पूजा मानकर करता है और बड़ी ईमानदारी और वफादारी के साथ काम करता है और उसकी मूलभूत जरूरते भी नही पूरी हो पाती है ।मरता है तो कर्ज का बोझ अपने आश्रित के उपर छोड़कर । इसी कर्ज की भरपाई में पीढियां तक गुजर जाता है । कमजोर गरीब की तकदीर नही संवरती है और दूसरी ओर एक चालबाज व्यक्ति तकदीर की आड़ में धन का पहाड़ खड़ा कर लेता है।छोटी पूंजी बड़े–बड़े खजाने का मुंह खोल लेती है । यदि भगवान की ऐसी मर्जी है तो भगवान भी पक्षपाती है । अमीर को अमीर बनाने में और गरीब को और गरीब बनाये रखने में परन्तु भगवान ऐसा नही कर सकता क्योंकि मां–बाप की नजरों में औलादे बराबर होती है । ठीक है कर्म की बात पर हम जरा गौर फरमाते है,कहते है कर्म का फल मिलता है हम भी इस बात को पूरी तरह से मानते है परन्तु कर्म कोई और करे फल कोई और हड़प ले तो इसमें दोषी कौन हुआ–कर्म करने वाला,भगवान या कर्मफल अर्थात हक छिनने वाला । यकीनन हक छिनने वाला दोषी हुआ ।इस दोष की सजा उसे देगा कौन ? गरीब मजदूर दबे कुचले व्यक्ति के बस की बात तो रही नही ।वह अपना और अपने परिवार के पेट पालने की जुआड़ में हाड़ निचोड़े या तबाह होने के लिये पत्थर पर सिर पटके । इससे तो उसका जीवन और कष्टदायक हो जायेगा । आखिरकार यह जानते हुए कि उसकी नसीब अमीर की कैदी बनकर बना दी गयी है तकदीर के नाम पर ।

प्रश्न उठता है कि गरीब,कमजोर और कुचले वर्ग के करोड़ो लोगो की बिगड़ी तकदीर संवर क्यों नही रही है,जबकि यह वर्ग हाड़फोड़ मेहनत कर रहा है । देश और समाज के नवनिर्माण की आधार शिला इसी की छाती पर टिकी हुई है । इसके बाद भी वह शोषित है पीड़ित है,तंगी लाचारी और छुआछूत जैसी सामाजिक महामारी की चपेट में भी है । क्या यह भगवान का विधान कहां जा सकता है कदापि नही यह तो बस चालबाज लोगो की बदनियत से रचा चक्रव्यूह है जिसमें फंसा व्यक्ति जन्म–जन्मान्तर तक नही निकल सकता । भारतीय रूढिवादी व्यवस्था में तो और भी गुंजाइस नही बचती है क्योंकि यहां की जातीय–व्यवस्था का ताना बना ऐसे ही बना हुआ है जैसे जंगल का राज । यहां जितना जातीय सबल है उतनी ही अधिक सम्पन्नता और श्रेष्ठता की योग्यता रखता है। नतीजन आज भी भारतीय व्यवस्था का घिनौना सच छुआछूत जवान है इसकी चपेट में आये व्यक्ति की तकदीर आज भी कैदी की भांति है अथवा वनवास झेल रही है। इस व्यक्ति का उद्धार नही हुआ है और भारतीय रूढिवादी व्यवस्था से तो ऐसी कोई उम्मीद भी नही है । वर्तमान व्यवस्था से भरपूर उम्मीदे तो है पर वहां भी तो दबदबा दंबगों का ही है । यदि कमजोर तबके के लोग अपने संघर्ष और सर्वकल्याण के अटल इरादे से वहां तक पहुंच भी गये है तो उनकी बातों हवा में उड़ जाती है । इसी का नतीजा है कि वर्तमान व्यवस्था में भी आज भूमिहीनता दरिद्रता और छुआछूत का अभिशाप दबा तबका झेल रहा है,तरक्की से कोसो दूर बैठा आंसू बहा रहा है और दूसरी ओर छल–बल के सहारे

आदमी भगवान तक को ठेंका दिखा रहा है । क्या ऐसी तकदीर बनाने का दोष भगवान के माथे मढना भगवान के प्रति अन्याय नही ?

निशपक्षता और मानवता के दृष्टिगत् विचार करे तो पाते है कि अपने इर्द गिर्द कई लोग अपात्र होकर भी इतने पात्र हो गये है कि कई–कई सचमुच के पात्रो की तकदीरों को अपनी तकदीर बना लिये है सिर्फ श्रेष्ठता के ताकत के बल पर ।यही कारण है कमजोर तबके का पात्र व्यक्ति भी तरक्की का मुंह नही देख पाता क्योंकि न तो उसके पास इतनी पहुंच है और नही दूसरी अन्य ताकतें । कमजोर तबके को अनादि काल से ऐसे कोल्हू के बैल की तरह पीसा जा रहा है। उसका हक छिना जा रहा है ।उसे दरिद्र बनाये रखने के लिये धार्मिक स्तर पर भी हुए प्रयासों को नकारा नही जा सकता ।इसका ज्वलन्त उदाहरण हमारी रूढिवादी व्यवस्था है । इस बात को तो मानना ही पड़ेगा रूढिवाद की चिन्ता करने वाला को अब मानव–कल्याण के मुद्दे पर सोचना होगा क्योंकि यह व्यवस्था पहले से ही मानवता के माथे का कोढ सिद्ध हो चुकी है । वर्तमान समय में तकदीर के झांसे में कमजोर वर्ग को रखे रहना दुनिया की निगाहों में अन्याय होगा ।

तनिक जल,जमीन और जंगल के मुद्दे पर दृष्टिपात कर लेते है ।सचमुच मन की गहराईयों से विचार करे तो पायेगे कि आज जिनका जल,जमीन और जंगल पर अधिपत्य है क्या सचमुच वे इसके हकदार है नहीं । दुर्भाग्यवस जिसने कभी तालाब पोखर में कभी नहाया नही आज उसी के नाम पट्टे है। कमजोर वर्ग पोखर तालाब के पास से गुजरने में डर रहा है क्योंकि वह तालाब पोखर एक दबंग के आधुनिक व्यवसाय का केन्द्र बन चुका है । सही मायने में तो सार्वजनिक जल स्रोता,तालाब पोखरों पर तो उसी का हक होना चाहिये जो इससे सदियों से जुड़ा हुआ है । भूमिहीनता के मुद्दे को खगालने पर पाते है कि यहां भी सबल का एकाधिकार है ,जो व्यक्ति खेत में जमीन में अपना जीवन स्वाहा कर रहा है वह या तो खेतिहर मजदूर है या भूमिहीन । जो व्यक्ति खेत में जमीन में अपना जीवन स्वाहा कर रहा है उसके पास झोपड़ा डालने तक की जीमन नही है दूसरी और जिस आदमी के पैर जमीन पर नही पड़ते वह सैकड़ों एकड़ों तक की जमीन का मालिक बन बैठा है । जंगल के मामले में भी वही हाल है,दबंग और सबल लोग हथियाये जा रहे है धरती तक को नंगी बनाने पर तूले हुए है । छाती पर हाथ रखकर आदमी जाति–धर्म से उपर उठकर यदि सोचे तो वह पायेगा कि अधिकतर कब्जेधारी लोग असली हकदारों की तकदीर को कैद कर चुके है और दबा–कुचला व्यक्ति इसी तकदीर को संजीवनी मानकर श्रमसाधना में लगा हुआ कि कल उसकी तकदीर जरूर बदलेगी और सही भी है उसका हक उसे मिल जाये तो उसकी तकदीर जरूर संवर सकती है परन्तु गिद्धों के कब्जे से छूटे तब ना ?

मानव जाति के लिये दुर्भाग्य की बात है कि एक आदमी आदमी को कमजोर और दरिद्र बनाये रखने के लिये जातीय श्रेष्ठता के बल का प्रयोग करता है,धार्मिक दबंगता का प्रयोग करता है और हठता का प्रयोग करता है ,छल बल और दण्डात्म रूख भी अख्तियार कर ले रहा है । उस समय तो यह और भी गिर जाता है जब एक दबे वर्ग की अबला को निर्वस्त्र कर देता है और सरेआम मर्यादा का जनाजा निकाल देते है । मंदिर के प्रवेश पर रोक लगा देता है । दरवाजे के सामने से जूता हाथ में लेकर जाने को मजबूर करता है ।आदमी के साथ छुआछूत का दुर्व्यवहार करता है ।आदमी आदमी को अछूत कहता है क्या कोई धर्म ऐसा दुर्व्यवहार करने की इजाजत देता है यदि हां तो वह धर्म नही पाखण्ड है।ऐसे पाखण्ड मानवता की जड़ में खौलता पानी डालने के अलावा और कुछ नही कर सकते हां देश को तबाही के रास्ते पर भी ले जा सकते है सिर्फ अपने मतलब के लिये। अपनी सत्ता कायम बनाये रखने के लिये । धर्म तो आध्यात्मिकता की ईंट और आस्था के गारे की पकड़ है जो ऐसा करने की इजाजत कभी नही दे सकता परन्तु धर्म को रूढिवाद के रंग में बदरंग कर वो सब किया जा रहा है जो नही किया जाना चाहिये । एक आदमी आदमी की तकदीर पर कब्जा जमाये हुये है,कमजोर आदमी को झांसे में रखकर अपनी पकड़ मजबूत बनाये रखने के लिये तकदीर का खेल बताकर खुद सर्वशक्तिमान तक को ठेंगा दिखा रहा है । सच तो ये है तकदीर रूढिवादी सोच का चक्रव्यूह है जिस चक्रव्यूह से निकलने का कोई रास्ता नही छोड़ा गया है परन्तु कैद तकदीर वाला वर्ग सूरज को दीया दिखाने में सफल हो रहा है क्योकि वह कैद तकदीर के अभिशाप को समूल नष्ट करने के लिये लहू को पसीना बनाकर धरती और जीव को सींचित किये हुए है कि उसका परिश्रम कल जरूर कुसुमित होगा और उसका लूटा हुआ हक भी मिलेगा। तकदीर रूढिवादी सोच का चक्रव्यूह है यह जानते हुए भी सम्भावनाओ में देश और समाज के नवनिर्माण में लगा हुआ है । यही दबे –कुचले गरीब,कमजोर लोगो की विजय है क्योंकि मानव निर्मित चक्रव्यूह में फंसे हुए भी यह तबका हार नही माना है। मौन पत्थर दिलों पर दस्तख्त करते गरीबी,भूखमरी,अश्पृश्यता आदि अनेक दिक्कतों का सामना पल–पल

करते हुए भी देश और मानव विकास की चमक को अपने पसीने से सरोबार किये हुए है । चाहता तो यह बड़ा वर्ग कैद तकदीर मानवीय हक को लेने के लिये जंग का ऐलान कर सकता था परन्तु वह इसे देश और समाज के लिये हितकर नही समझा। तकदीर के अभिशाप को सम्भावना में बदल कर लाख मानव निर्मित मुश्किलों से जूझते हुए भी नवनिर्माण ही नही जगत का भार अपनी छाती पर ढो रहा है । कल का सूर्यादय मानवी समानता और हक की सम्भावना को सफल बनायेगा तो क्या सबल,दबंग और तथाकथित श्रेष्ठता के नाम पर पल–पल मुखौटा बदलने वाले इस दबे–कुचले,कमजोर,गरीब को उसका हक देने में ईमानदारी बरतेगे ? यह तो समय बतायेगा परन्तु यह तो सिद्ध हो चुका है कि तकदीर रूढिवादी सोच का चक्रव्यूह है,शेषित,पीड़ित समाज के दमन का न खत्म होने वाला कुचक्र है। इस चक्रव्यूह से दबे–कुचले,कमजोर,गरीब शेषित, पीड़ित समाज को उबारने के लिये देश और सभ्य समाज के शुभचिन्तकों तो शंखनाद कर देना चाहिये ।